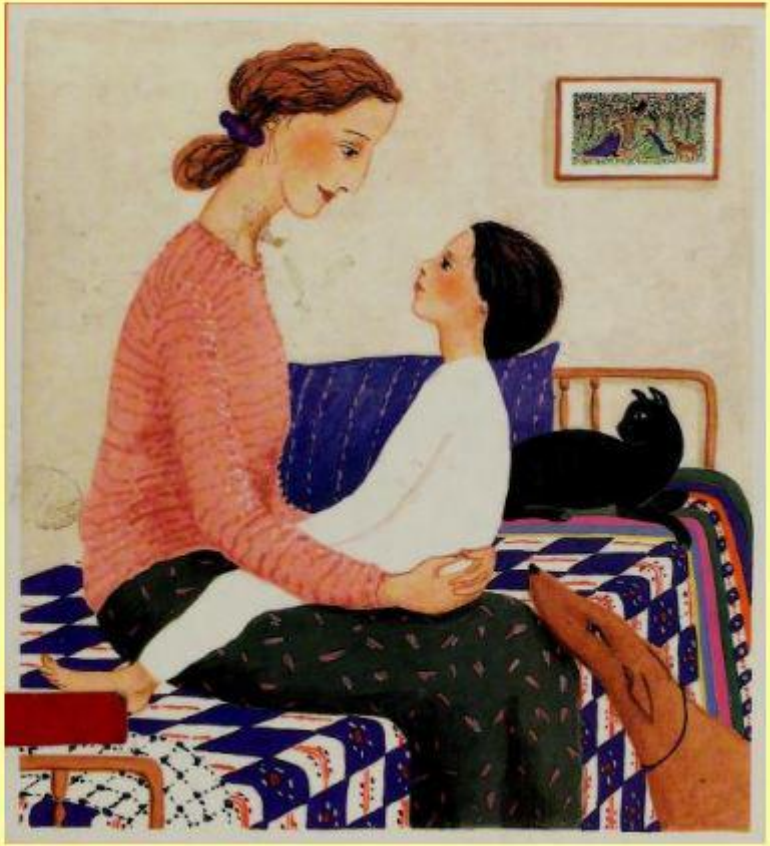
गोद लेने की एक सच्ची कहानी सुनाओ



गोद लेने की एक सच्ची कहानी सुनाओ





गोद लेने की एक कहानी सुनाओ.

दुबारा?

हाँ, दुबारा.

फिर तुम सो जाओगे?

हाँ, फिर मैं सो जाऊँगा.

ठीक है, यह कहानी सुनो-

एक समय की बात है कि एक मछुआरे और उसकी पत्नी

को नदी के किनारे एक चट्टान पर एक छोटा बच्चा मिला.

नहीं, यह कहानी नहीं.

वह कहानी सुनाओ जो मैंने पहले कभी सुनी न हो.





बहुत अच्छा, चलो एक नई कहानी सुनो.

एक समय की बात है कि एक राजा और एक रानी

अपने विशाल महल में एक कुत्ते और एक बिल्ली के साथ रहते थे.

वे हमारे कुत्ते और बिल्ली जैसे थे?

हाँ, बिलकुल उनके जैसे. लेकिन राजा और रानी बहुत उदास रहते थे

क्योंकि उनके पास वह नहीं था जो वह पाने को बहुत इच्छुक थे.

तुम जानते हो कि वह क्या था?

एक बच्चा.





बिलकुल सही. और उन्होंने कुछ बुद्धिमान लोगों को यह पता लगाने के लिए राज्य में हर ओर भेजा कि उन्हें एक बच्चा कहाँ मिल सकता था.





क्या कोई जानता था?

कोई न जानता था. राजा और रानी की उदासी बढ़ती गई.





और फिर एक दिन एक बुढ़िया महल के पास आई. वह भविष्य बता सकती थी. उसने कहा कि उसे राजा और रानी को कुछ बताना था. पहरेदार उसे वापस लौटाने वाले ही थे कि राजा, रानी उधर आये.

“उसे भीतर आने दो,” उन्होंने पहरेदार से कहा.



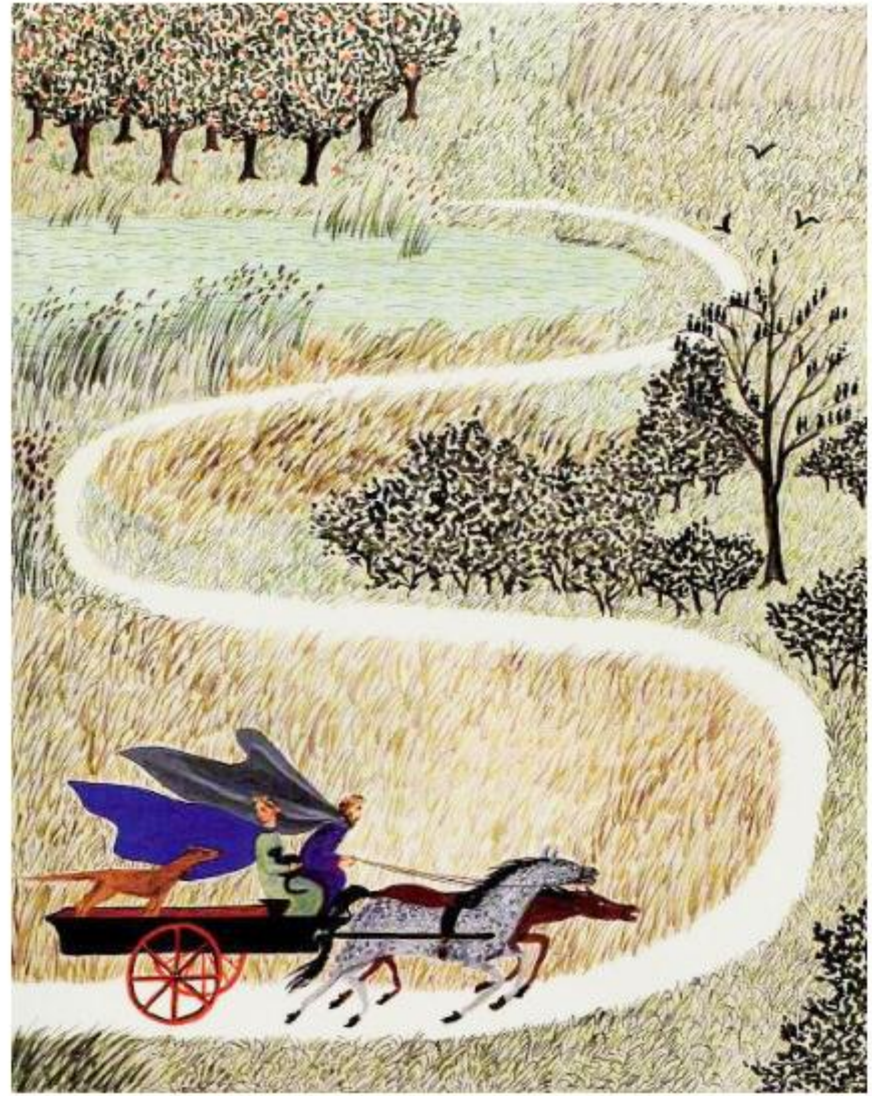
क्या वह अंदर आई? हाँ.

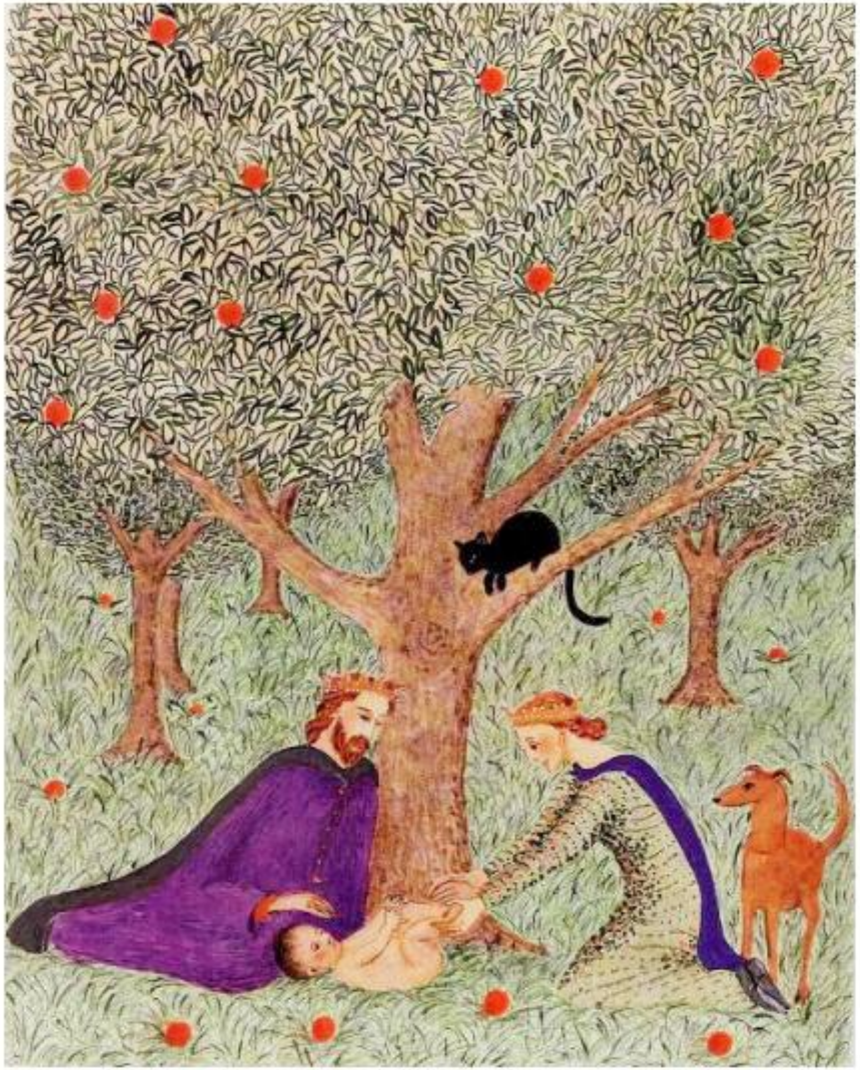
उसने उनसे क्या कहा?

उसने कहा, “आपके राज्य की सीमा पर जो झील है उसके थोड़ा आगे संतरों का एक उपवन है. अगर आप उस उपवन में अपना रथ ले जायें तो आपको वहाँ वह मिलेगा जो सुखी रहने के लिए आपको चाहिए.”

तो राजा और रानी ने अपने कुत्ते और बिल्ली को रथ में बिठाया और चल दिए. वह चलते गए, चलते गए और राज्य की सीमा पर जो झील थी, उसके आगे संतरों के उपवन में पहुंच गए. और तुम्हें पता है कि उन्हें वहाँ क्या मिला?

एक बच्चा.





बिलकुल सही. वहाँ एक पेड़ के नीचे उन्हें एक नन्हा बच्चा मिला.

वह बच्चा कहाँ से आया था?

तुम्हारा मतलब क्या है?

वह बच्चा पेड़ के नीचे कैसे पहुँचा?

ओह, मुझे नहीं पता. इस बात का कोई महत्व नहीं है.

क्यों नहीं है?

क्योंकि महत्व इस बात का है कि बच्चे ने राजा और रानी की ओर अपने हाथ उठाये और वह समझ गए कि बच्चा उनके पास आना चाहता था. उन्होंने उसे उठा लिया, और कुत्ते और बिल्ली के साथ, अपने महल में ले आए. और फिर वह सब एक साथ प्रसन्नता से रहे.

बस, कहानी समाप्त?

हाँ, बस इतना ही.

और अब सोने का समय हो गया है.

लेकिन वह बच्चा आया कहाँ से था?

मैंने बताया न, मुझे नहीं पता.



मुझे लगता है कि मुझे पता है.



यह कहानी मुझे पसंद नहीं है.

क्यों?

यह एक काल्पनिक कहानी थी. गोद लेने की एक सच्ची कहानी सुनाओ.

सच्ची कहानी क्या होती है?

मेरे बारे में एक कहानी.

एक तरह से यह कहानी तुम्हारे बारे में ही थी.

तुम वहाँ नीचे क्या कर रहे हो?

मैं कभी बाहर नहीं आऊँगा.

कभी नहीं?

जब तक तुम मुझे एक सच्ची कहानी नहीं सुनाओगी तब तक नहीं.

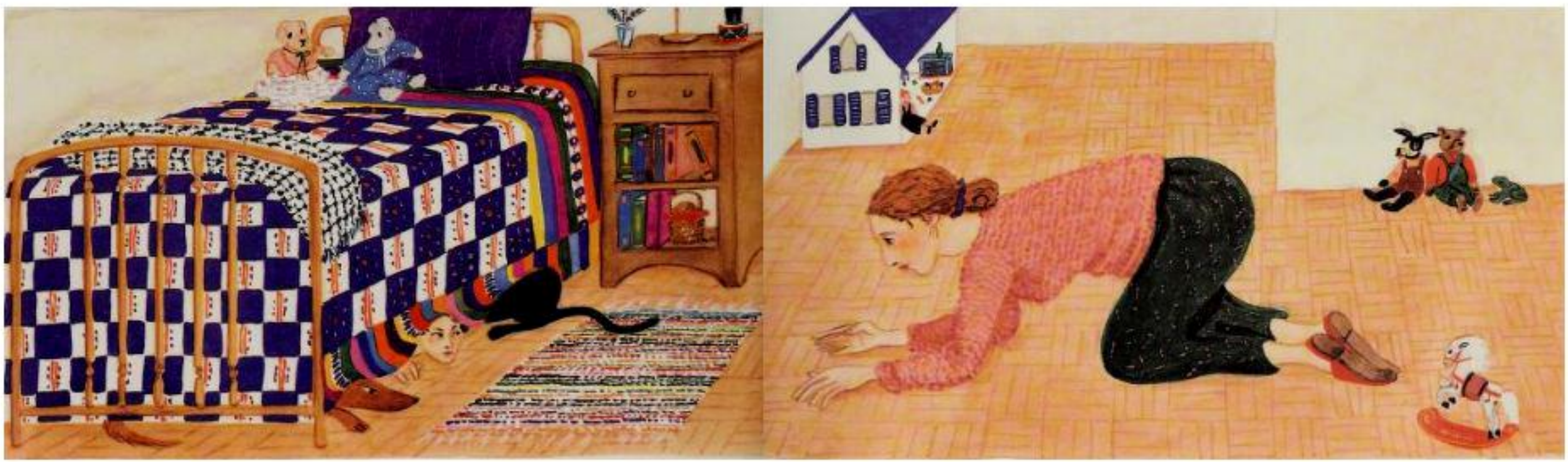
प्लीज़, बाहर आ जाओ.

नहीं.

मुझे लगता है कि जो कहानी तुम सुनना चाहते हो मुझे याद आ रही है.

वचन दो कि उसमें कुछ भी काल्पनिक नहीं होगा.

मैं वचन देती हूँ.





मैं कहाँ से शुरु करूँ?

शुरु से.

तो एक सच्ची कहानी सुनो, शुरु से.

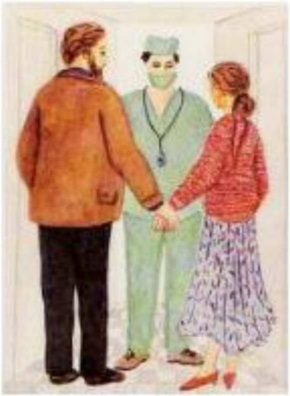
एक समय, बहुत वर्ष पहले नहीं,

एक असली औरत और असली आदमी थे.

तुम्हारे और डैडी जैसे?



हाँ, बिलकुल हमारे जैसे. और उनके पास एक असली,
आरामदायक घर था.
हमारे घर जैसा?
हाँ, बिलकुल हमारे घर जैसा. और उनके पास एक
असली कुत्ता और असली बिल्ली थी.
हमारे कुत्ते और बिल्ली जैसे?
हाँ, बिलकुल वैसे. लेकिन उनके पास वह नहीं था
जो वह सच में चाहते थे- एक असली बच्चा.
मेरे जैसा बच्चा.
बिलकुल तुम्हारे जैसा.
फिर क्या हुआ?



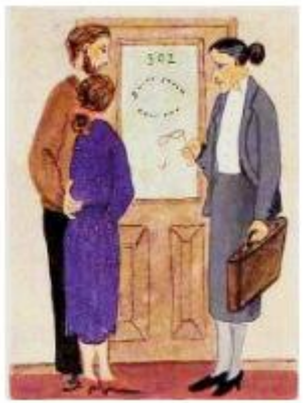
और फिर यह पता लगाने के लिए कि उन्हें एक बच्चा कहाँ मिल सकता था उन्होंने उन सब से पूछा जिन्हें वह जानते थे. उन्होंने डाक्टरों से पूछा और उन्होंने वकीलों से पूछा. उन्होंने अपने मित्रों से पूछा और उन्होंने अजनबियों से पूछा और दत्तक के जानकारों से पूछा.



क्या उन्होंने किसी भविष्य बताने वाले से पूछा?

हाँ, उनकी भेंट एक ऐसी औरत से हुई थी जो एक तरह से भविष्य बता सकती थी क्योंकि वह एक ऐसी युवती को जानती थी जो शीघ्र ही एक बच्चे को जन्म देने वाली थी.







क्या वह मैं था?

हाँ, वह तुम ही थे.

तुम्हारा मतलब है कि मैं तुम्हारे पेट में नहीं था.

नहीं, लेकिन काश कि तुम होते.

लेकिन तुम अपनी दूसरी माँ के पेट में थे.

जैसे ही हम ने तुम्हारे बारे में सुना,

डैडी और मैं उस युवती से मिलने गए.

तुम दोनों उससे मिले?

हाँ, हम भाग्यशाली थे.

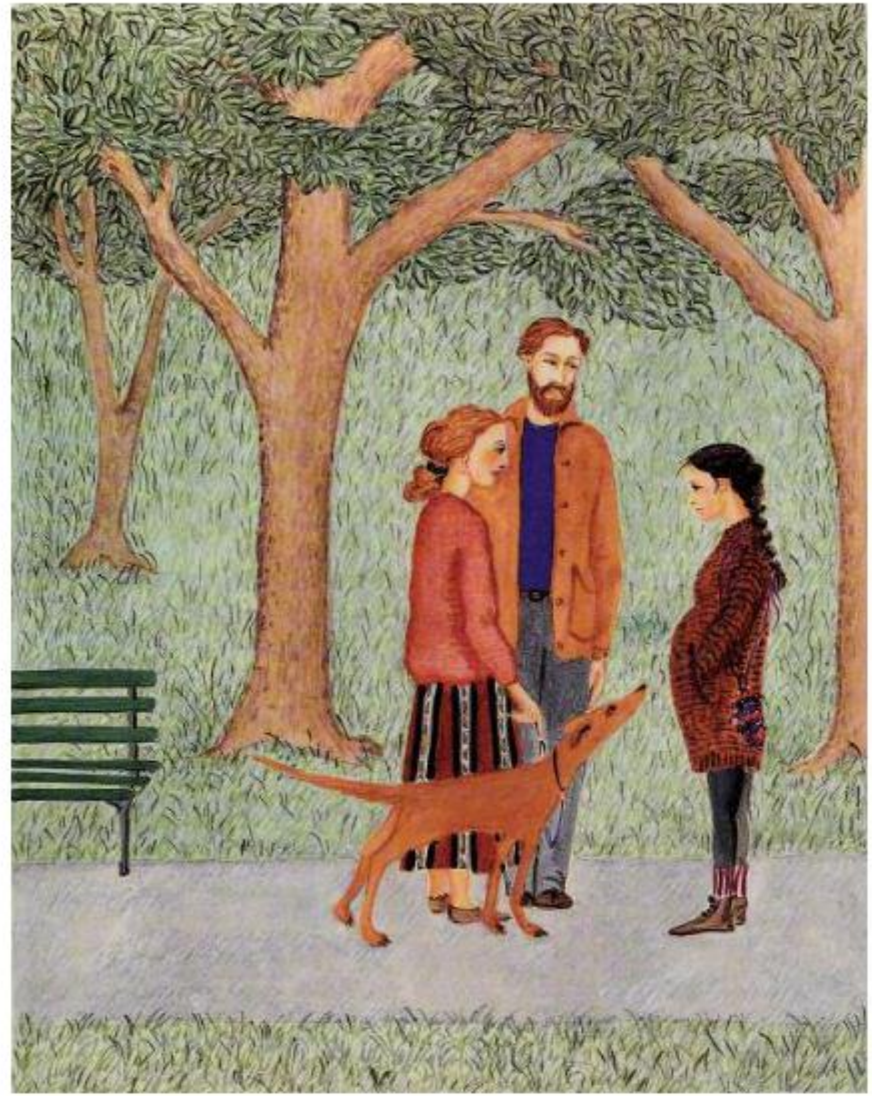
कभी-कभी कई माता-पिता

अपने बच्चों की माताओं से मिल नहीं पाते.

वह कैसी दिखती थी?

वह बिलकुल तुम्हारे जैसी दिखती थी.

फिर क्या हुआ?



फिर तुम्हारा जन्म हुआ. डैडी और मैं अस्पताल गये
और तुम्हारी माँ ने तुम्हें हमारी गोद में डाल दिया.

क्या वह उदास थी?

वह बहुत दुःखी थी क्योंकि वह तुम्हारी देखभाल न कर सकती थी.

क्या वह रोयी थी?

हाँ, वह बहुत रोयी थी. और डैडी और मैं भी रोये थे.
हम सब एक साथ रोये थे.

तुम और डैडी क्यों रोये थे?

क्योंकि हम जानते थे कि हम तुम्हें पाने को कितने उतावले थे.
लेकिन हम यह भी जानते थे कि तुम्हारी माँ को तुम्हारी कमी बहुत
खलने वाली थी. फिर हम ने एक-दूसरे को गले लगाया और प्यार किया.
हम ने एक-दूसरे को कस कर पकड़े रखा.

क्या उसने कुछ कहा?

उसने कहा कि वह तुम्हें बहुत प्यार करती थी.
और तुम्हें कभी नहीं भूलेगी.

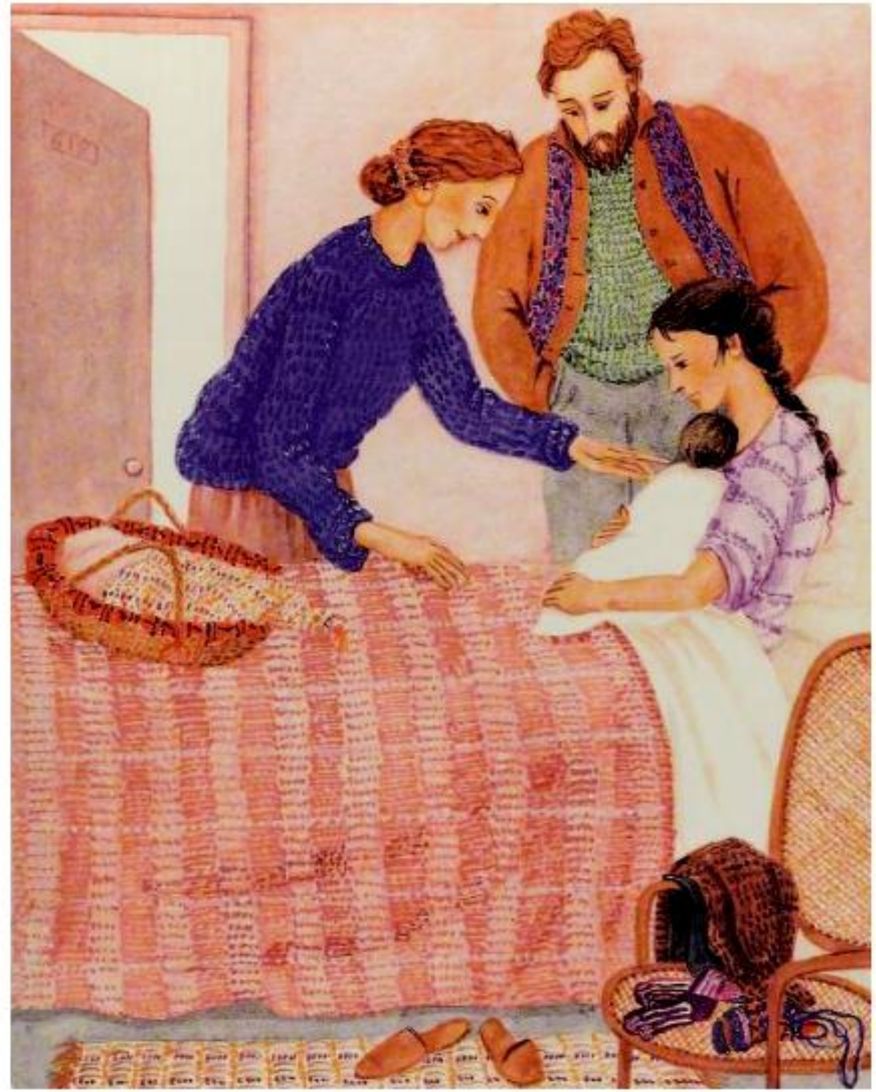
क्या मैं रोया था?

नहीं, तुम नहीं रोये थे.

मैंने क्या किया?

तुम सोये रहे, एक नर्म कंबल में आराम से लेटे हुए.

और बताओ.



फिर डैडी और मैं तुम्हें घर ले आये. मुझे अभी भी याद है कि तुम्हारा स्वागत करने के लिए कुत्ता और बिल्ली घर के दरवाज़े पर ही प्रतीक्षा कर रहे थे. उन्होंने तुम्हें अच्छे से सूंघा - और उनका ऐसा करना तुम्हें अच्छा लग रहा था. हम ने सब की एक साथ कुछ तस्वीरें लीं और उन्हें तुम्हारी दूसरी माँ को भेज दिया.

क्या सच में?

हाँ, और तुम बड़े होते गए, बड़े होते गए और इतने बड़े हो गए जितने बड़े तुम आज हो.





मेरी दूसरी माँ अब कहाँ है?
मुझे नहीं पता.
क्या वह मेरे बारे में कभी सोचती होगी?
अवश्य सोचती होगी. क्या तुम उसके विषय में सोचते हो?
कभी-कभी. वह मेरी देखभाल क्यों न कर सकी?
वह करना चाहती थी. लेकिन तुम्हारे दूसरे डैडी
और उसके लिए ऐसा करना संभव न था.
क्यों संभव न था?
शायद कभी एक दिन तुम उससे पूछ पाओ.
मैं उसकी तस्वीर देखना चाहता हूँ.
डैडी और मैं उसकी तस्वीर पाने का प्रयास कर सकते हैं.
वह भी शायद अब तुम्हारी तस्वीर देखना चाहे.
उसके लिए मैं अपने कमरे में अपने कुत्ते
और बिल्ली के साथ अपनी तस्वीर बनाऊंगा.
यह तो अद्भुत विचार है.
और एक तस्वीर मैं अपने दूसरे डैडी के लिए भी बनाऊंगा.



अब मैं सोऊंगा.

मैं खिड़की खोल देती हूँ.

उसे पूरा खोलना.



क्या तुम्हें कहानी अच्छी लगी?

हाँ!

क्यों?

क्योंकि वह मेरी कहानी थी.

सच में मेरे बारे में थी.







दत्तक माता-पिता के लिए

सब बच्चों की अपनी एक सच्ची कहानी होती है जो उनके जन्म से ही शुरु हो जाती है; शायद जन्म से पहले ही शुरु हो जाती है. अगर अपने दत्तक बच्चे को उसके संसार में आने की और आपके परिवार का सदस्य बनने की सच्ची कहानी सुना देंगे तो आप उसके विश्वास को सुदृढ़ कर पायेंगे.

इस पुस्तक में कहानी के भीतर एक कहानी है. दत्तक माता-पिता अपने बच्चों को सच्चाई बताने के लिए इस कहानी का उपयोग कर सकते हैं.

इस किताब में लिखी सच्ची कहानी के दत्तक माता-पिता असली माँ से थोड़े समय के लिए मिले थे. ऐसी स्पष्टता अब धीरे-धीरे आम होती जा रही है क्योंकि दत्तक माता-पिता और अनुभवी लोगों का मानना है कि गोद लिए बच्चों को अपने वंश की जानकारी होनी चाहिए.

.

अगर आपके पास अपने बच्चे की सारी जानकारी नहीं भी है तब भी यह किताब आपके काम आ सकती है. हर गोद लिए गए बच्चे के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है और फिर उन बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते हैं.

अगर आप बच्चे को किसी दूर देश से लाए हैं तो आप उसे बता सकते हैं कि कैसे आप हवाई अड्डे या दूसरे देश गए थे और उसे लेकर आए थे.

जैसे बच्चा बड़ा हो वैसे ही आपकी कहानी भी बढ़ती जाए. इस तरह उससे आपका संबंध और मज़बूत हो जाएगा

समाप्त